ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

ओसर पशुओं का रख-रखाव एवं प्रबन्धन

अजय कुमार, ममता, दीप नारायण सिंह, रजनीश सिरोही एवं यजुवेन्द्र सिंह

पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, दुवासू, मथुरा

मादा पशु जब एक साल की उम्र के हो जाते है तब उनके प्रथम ब्यांत तक उन्हें ओसर कहा जाता है। सामान्यतः यह देखा गया है कि बछडे-बछडियो की देखभाल व आहार प्रबन्धन पर आमतौर पर विशेष ध्यान नही दिया जाता है। परन्तु , यदि हमें उत्तम पशु प्राप्त करना है तो उसकी तैयारी इसी अवस्था से ही करनी होगी। जैसाकि कहा गया है- "आज की बछड़ी कल की गाय" है । डेरी व्यवसाय में परिवर्तित वंश की व्यवस्था दो प्रकार से की जा सकती है। ओसर का क्रय करके अथवा अपने ही कार्य की बछियों का इस अवस्था तक विकास करके। इस दूसरी विधि में ओसर क्रय की अपेक्षा पशु आहार और श्रमशक्ति में अधिक लागत लगती है किन्तु स्वंय विकसित किए हुए बछडे-बछडियो उच्च गुणवत्ता के होते है और साथ ही इस विधि द्वारा किसी बाहरी संक्रमण के झुण्ड में प्रवेश करने की सम्भावनाऐं भी खत्म हो जाती है। किन्तु तात्कालिक लाभ न मिलने के कारण यह पक्ष कुछ उपेक्षित रह जाता है जिसके कारण बछडों में मृत्युदर भी अधिक पायी जाती है।

ओसर प्रबन्धन का लक्ष्य

1.**शरीर का वजन-** ओसर की यौन परिपक्कता आयु के बजाय शरीर के वजन से अधिक सम्बन्धित होती है।

परिपक्क शरीर के वजन का - 40-50:, यौवन, पहली गर्मी

परिपक्क शरीर के वजन का - 50-60:, परिपक्कता, प्रजनन का समय

परिपक्क शरीर के वजन का - 80-85:, पहली बार व्याने का समय

2.**शरीर का वजन बढ़ना-** देशी पशु के भार में वृद्धि 600 ग्राम प्रति दिन होनी चाहिए जिससे पशु जल्दी प्रजनन परिपक्कता मे आ जाता है जबकि विदेशी नस्लों के लिए प्रतिदिन भार में वृद्धि 800-900 ग्राम होनी चाहिए।

3.**प्रजनन आयु-** समय से पहले प्रजनन से ओसर की उचित वृद्धि और विकास बाधित होगा जिससे उसकी जीवन भर की उत्पादकता कम हो जायेगी । 15-18 महीने की आयु के बीच ओसर पशु यौन परिपक्कता में आ जाते है यह बछिया के उत्पादक जीवन को बढायेगा और प्रत्येक वर्ष उत्पादित बछड़ों व बछिया की संख्या में वृद्धि करेगा।

4.**पहली बार ब्याने की आयु-** जब बछिया 15-18 महीने के बीच गर्भधारण करती है और 280 दिनों की गर्भधारण अवधि समाप्त होने के बाद नवजात वत्स को जन्म देती है। इसलिए आदर्श व्यात की आयु 25-28 महीने के बीच होनी चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पहली बार ब्याने का वजन-जब देशी बछिया नवजात बच्चे को जन्म देती है तो उसका वजन 400 से 450 किलोग्राम और विदेशी नस्लों के लिए 550 से 600 किलोग्राम या उसके शरीर के वजन का लगभग 85 प्रतिशत होना चाहिए।

6.**प्रतिस्थापन वंश-** अधिकांश डेयरी फार्मों में 20-25 प्रतिशत गायों को हर साल नये ब्याई गायों से परिवर्तित कर दिया जाता है। ताकि डेयरीफार्म की अर्थव्यवस्था प्रभावित न हो और अधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता वाले पशु झुण्ड में बने रहे।

शारीरिक स्थिति स्कोर- बहुत मोटे या दुबले बछिया प्रजनन के उद्देश्ष्य से उपयोग नही किये जाने चाहिए। एक वर्ष की आयु से प्रजनन आयु तक एक बछिया का शारीरिक स्थिति स्कोर 2.50 होना चाहिए और प्रजनन से लेकर ब्याने तक 3.25 से 3.50 होना चाहिए।

ओसर के उचित प्रबन्धन हेतु निम्न बातों पर ध्यान देना अतिआवश्यक है।

- बछियों को प्रथम बार मद में आने की अवस्था तक बाकी नर जानवरों से अलग रखना चाहिए।
- बछियों के भरण-पोषण पर उचित ध्यान देना आवश्यक है , जिससे उसकी शारीरिक वृद्धि सही तरीके से हो सके और वह सही समय पर मद में आना प्रारम्भ करें तथा भविष्य में उसका प्रजनन चक्र सामान्य बना रहे।
- उचित भरण-पोषण होने पर ओसर 12-18 महीने के बीच मद में आना शुरू कर देती है।
- गर्भाधान हेतु उपयुक्त होने पर मदकाल प्रारम्भ होने के लगभग 12 घण्टे के बाद लेकिन 16 घण्टे से पूर्व कृत्रिम गर्भाधान या उचित प्रजाति के सांड द्वारा गर्भित कराना चाहिए।
- गर्भाधान कराने के 2-3 माह के बाद गर्भ परीक्षण अवश्य करायें। ऐसा देखा गया है कभी-कभी 45-60 दिन वाले कुछ पशु मद के लक्षण प्रदर्षित करते है। अतः किसी भी पशु का गर्भाधान बिना जाँच कराये कभी नहीं करना चाहिए।
- गर्मी के मौसम में विशेष ध्यान रखना चाहिए , जैसे दिन में 2-3 बार ताजा स्वच्छ ठंडा पानी पिलाना चाहिए और अगर हो सके तो प्रतिदिन नहलाना चाहिए।
- बछियों का आवास ऐसा होना चाहिए जिससे वह सुविधा पूर्वक रखी जा सके और जिसमें चारा खिलाने, जल निकासी तथा साफ-सफाई आदि सुगमता पूर्वक की जा सके।
- रिकार्ड रखना-गौशाला के हर कार्य का उचित रिकार्ड रखना चाहिए। पशुपालन के आय व व्यय के रिकार्ड से इस व्यवसाय में होने वाली लाभ/हानि के बारे में पता चल जाता है। गौषाला पर होने वाले विभिन्न गतिविधियों का रिकार्ड , नवजात बच्चों की जन्म तिथि , शारीरिक भार में वृद्धि, प्रजनन की तिथि, टीकाकरण, डीवर्मिंग आदि का उचित रिकार्ड रखना चाहिए।
- पहचान-बछिया को स्थायी अथवा अस्थायी प्रकार से निशान लगाये जाते है बछिया का पूरा रिकार्ड रखने के लिए उनकी पहचान जरूरी है। इसलिए बछिया में पहचान के लिए ईयरटैग या ब्राडिंग से की जा सकती है।

टीकाकरण-संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण सर्वाधिक प्रभावी एवं सबसे सस्ती विधि माना जाता है। मुहपका एवं खुरपका , ब्रूसिलोसिस गोजातीय वाइरल डायरिया जैसी विभिन्न बीमारियों के लिए ओसर पशु में टीकाकरण करवाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

परिजीवियों का नियत्रंण-हर 3 महीने में सभी बछियों को आंतरिक परिजीवियों के प्रतिकूल डीवर्म करें। बाह्य परजीवियों से बचने के लिए ग्रुमिंग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार यदि उपरोक्त छोटी-छोटी किन्तु महत्वपूर्ण बातों को ध्यान देकर पशुपालक अपने पशु के प्रति पूर्ण जिम्मेदारी निभा सकेगें जिसके परिणाम स्वरुप उन्हें अच्छे प्रजनन शील तथा उत्पादक पशु मिलेगें और अगली पीढी की स्वस्थ सन्तति जो अधिक दुग्ध उत्पादन तथा लाभ के अतिरिक्त पशु पालक डेरी व्यवसाय, समाज तथा देश को लाभ पहुंचायेगी।